लक्ष्मीकारक कौड़ियां

कौड़ी संपदा की प्रतीक है। कौड़ियों से लेन-देन की अनेक घटनाएँ भी हैं। पैसों के बदले कौड़ियों से क्रय-विक्रय ग्रामीण जीवन में प्रायः देखने को मिलता है। बच्चों को नजर लगने से बचाने के लिए कौड़ी, गुरिया, मूँगा आदि पहनाने की प्रथा गाँवों में प्रचलित थी और कहीं-कहीं आज भी है। कौड़ी सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में भी पहनी जाती है। आज भी बहुत से आदिवासी जिले ऐसे हैं जहाँ कौड़ियों को आभूषणों की तरह इस्तेमाल किया जाता है। इनके विभिन्न आभूषण बनाये जाते हैं।

दीपावली की रात लक्ष्मी की अगवानी की रात होती है। इस दिन द्यूत क्रीड़ा का विशेष प्रचलन हैं जिसमें कहीं-कहीं कौड़ियों से दाँव जीते-हारे जाते हैं। प्राचीन काल में कौड़ी का अपना एक विशेष महत्व था। इसे लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है। समुद्र से उत्पन्न जितनी भी वस्तुएँ होती है वे सभी किसी-न-किसी रूप में लक्ष्मी पूजा में अथवा लक्ष्मी के प्रतीक के रूप में उपयोग में ली जाती है। शंख समुद्र से उत्पन्न है अतः लक्ष्मी का भाई माना गया है। शंख की पूजा का विशेष विधान है वहीं देवताओं के हाथों में शंख सुशोभित है। कौड़ी भी समुद्र से उत्पन्न है अतः इसे लक्ष्मीकारक माना गया है। कौड़ी के बहुत से प्रयोग हैं।

कौड़ी का संबंध शिव से भी जोड़ा गया है। शिव की बंधी जटाओं की शक्ल कौड़ी से बहुत मिलती-जुलती है। इसी कारण शिव को कपर्दिन कहा गया होगा। शिव के वाहन नंदी को आज भी कौड़ियों से खूब सजाया जाता है। शिव के 18 श्रृंगारों में कौड़ी भी सम्मिलित है। एक समय था जब समाज में कौड़ी की बहुत प्रतिष्ठा थी। मुद्रा के रूप में सिक्कों के स्थान पर इन्हीं का प्रचलन था। जिसके पास कौड़ी नहीं होती थी वह निर्धन, दरिद्र समझा जाता था। पंचतंत्र में एक स्थान पर कहा गया है कि "कौड़ी न होने पर मित्र भी दुश्मन हो जाता है"। आज हालांकि कौड़ी का मुद्रा के रूप में प्रचलन नहीं रहा लेकिन हमारी भाषा में, मुहावरों में, लोकोक्तियों में कौड़ी शब्द का उपयोग बहुत होता है। आज भी किसी को हिकारत से धिक्कारते हुए "दो कौड़ी का" सम्बोधन दिया जाता है।

कौड़ी हमारे धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन से इस कदर जुड़ी है कि कौड़ी उपासना की वस्तु है तो श्रृंगार सामग्री भी, सजावट की वस्तु है तो मनोरंजन का साधन भी।

जादु-टोना, तांत्रिक कार्यो में कौड़ी का जमकर उपयोग होता है। मनुष्य के दाह संस्कार के समय बिना कौड़ी के क्रिया-कर्म सम्पन्न नहीं हो पाता।

कौड़ी भारत के अलावा अन्य देशों में भी धर्म से जुड़ी हुई है। उसे देवी मां के रूप में देखा गया है।

विभिन्न कबीलों के अनुसार कौड़ी बुरी नजर एवं खतरों से बचाती हैं और इसी मानसिकता के कारण आज भी बच्चों के गले में कौड़ी में छेद कर पहनाया जाता है।

नए खरीदे हुए वाहन पर काले धागे से कौड़ी बांधी जाती है जिससे उस वाहन पर बुरी नजर नहीं लगती एवं दुर्घटनाओं से बचाव भी होता है।

नये मकानों की चौखट पर आज भी काले धागे में बाँधकर या काले फीते में लपेट कर कौड़ी बांधने का रिवाज प्रचलन में है। कई बार आपने देखा होगा कि मकान बनते-बनते ही कई बार ढह जाता है। इस प्रकार की रोक थाम एवं बुरी नजर, टोना, तांत्रिक प्रयोग आदि से बचाव के लिए कौड़ी बांधी जाती है।

पुराने चाँदी के सिक्के एवं रुपयो के साथ भी कौड़ियाँ रखी जाती है। दीपावली पूजन के समय उन कौड़ियों को भी दूध आदि से धोकर रुपयों के साथ पूजा की जाती है।

कौड़ियों को केशर या हल्दी से रंग कर पीले कपड़े में बांध कर रखने से लक्ष्मी आकर्षित होती है।

गल्ले में, पैसों की आलमारी में, लॉकर आदि में भी कई व्यक्ति बहुमूल्य सामान के साथ कौड़ी रखते हैं।

कई पुरानी हवेलियाँ, राजशी ठाठ वाले मकानों के पुनः निर्माण के दौरान उनकी नींव में भी कौड़ियाँ निकली।

वर-वधु के हाथ में शादी के समय बुरी नजर से बचाने के

लिए जो हाथ में कंगन बांधा जाता है उसके साथ भी कौड़ी बाँधी जाती है। आन्ध्र प्रदेश एवं उड़ीसा में विवाह के पश्चात् कौड़ियाँ देने का रिवाज आज भी है। असम की जन जातियों में दूल्हा अपनी दुल्हन को एक कौड़ी भेंट करता है, दुल्हन उसमें सिंदूर रखती है।

क्या आप जानते हैं, कौड़ी को पीस कर उसका बुरादा भी काम में लिया जाता है।

कामदेवियों की उपासना के रूप में कौड़ी प्रयोग में लाई जाती है। वीनस, सिबेला, अफ्रोदाहत, अस्तानी नामक कामदेवियों की उपासना कौड़ी से की जाती थी।

सूडान में स्त्रियाँ कौड़ी की करधनी अधिक संतान पाने की इच्छा से कमर में पहनती हैं। बाद में वहाँ पर सोने की कौड़ी बने आभूषणों को पहना जाता था।

कौड़ी का जहाँ सांस्कृतिक महत्व है वहीं सम्पूर्ण विश्व में धातु के सिक्कों के प्रचलन से पूर्व कौड़ी का प्रयोग व्यवसायिक लेन-देन में किया जाता है।

आज विश्व में 160 प्रकार की कौड़िया मौजूद है। यूनान की प्रसिद्ध देवी वीनस को प्रसन्न रखने के लिए साईप्रस में लोग उस पर कौड़ियों की भेंट चढ़ाते थे।

प्रति सिद्ध लक्ष्मीकारक कौड़ी न्यौछावर 21/– प्रति

♦♦♦

आपकी राशि और "लक्ष्मी कवच"

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार येक मनुष्य का नाम किसी-न-किसी श में होता हैं। राशि समय सूचक एक माप है। जिसका संबंध चद्रमा और नक्षत्रों की गति से जुड़ा होता हैं। रश्मिविज्ञान की मान्यता है कि प्रत्येक राशि और उससे सम्बद्ध नक्षत्र तथा चन्द्रगति का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य पड़ता हैं। बच्चे के जन्म का सही समय जानकर ज्योतिषी लोग बताते हैं कि जातक किस राशि नक्षत्र में जन्मा है, तथा उसके जीवन में इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

प्र
रा

राशि लक्ष्मी कवच न्यौछावर 2100/-

यह एक बहु-अनुभूत तथ्य है कि प्रत्येक राशि का जातक कुछ विशिष्ट और भिन्न -भिन्न प्रभाव वाला होता हैं। जातक की मूल वृत्तियाँ और उसके भाग्य का निर्माण करने में राशि का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। अपनी राशि का लक्ष्मी कवच धारण करने से राशि प्रभावगत दोषों का निवारण होता है और उसे सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है। नवग्रहों को अनुकूल बनाकर राशिनुसार शुभ प्रभाव बढ़ाने, धन-सम्पदा और भौतिक सुख प्रदान करने में ये कवच अत्यन्त सफल है।

सम्पर्क करें:- **विश्व तंत्र ज्योतिष**

प्लॉट नं.–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर(राज.)
0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291–2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamalshrimali.com

मंगली कुण्डली दोष निवारण पैकेट

'मंगली दोष' यह नाम सुनते ही हर व्यक्ति चिंतित हो उठता है या जिनकी संतान विवाह योग्य हो चुकी है वे अधिक चिंतित हो जाते है। लेकिन क्या वास्तव में मंगल दोष जीवन को, विवाह को प्रभावित करता है। तो इसका उत्तर है हाँ! जब तक मंगल के बुरे प्रभावों को समझने का प्रयास किया जाता है, तब तक वह बुराई की हद से भी गुजर चुका होता है। यही कारण है कि वर-कन्या की जन्मकुंडली मिलाते समय मंगल की स्थिति भी देखी जाती है, क्योंकि कुंडली के कुछ भवों में मंगल उपस्थित होने पर वह मंगलीक दोष का कारण बन जाता है। जिनकी कुण्डली मंगली है और वे विवाह का प्रयास कर रहे है तो उन्हें आवश्यकता से अधिक प्रयास करने पड़ते है, विवाह तय हो जाने पर भी सगाई टूट जाती है। विवाह के दिन ही कई बार दुर्घटनाएँ होती देखी गई है। विवाह के पश्चात् जब एक मंगली हो और दूसरा जातक मंगली ना होने पर परस्पर वैमन्स्यता देखी गई है। कटु संबंधों के कारण साथ रहना मुश्किल हो जाता है। कई ऐसी स्थितियाँ होती हैं लेकिन इसके साथ ही साथ दूसरे ग्रहों का संबंध, गोचर, दशा आदि भी जिम्मेदार बनती है। मंगली दोष होता ही नहीं यह कहना व्यर्थ ही होगा, जिसको पीड़ा होती है उसका दर्द दूसरा समझ पायेगा, कहना मुश्किल ही होता है। क्या इस मंगली दोष का कोई निवारण है, क्या इस समस्या से बचा जा सकता है, क्या मंगली दोष होने पर भी वर या कन्या का विवाह हो सकता है? यदि हां कहा जाये तो कोई मुश्किल बात नहीं क्योंकि जहाँ समस्या है वहाँ समाधान भी है और इसके लिये हम आपके लिए लाए हैं "मंगली दोष निवारण पैकेट" जो जीवन में इस दोष निवृति में सहायक बनेगा। रास्ता दिखाना हमारा दायित्व है, कर्म आपको करना है और फल भी आपको मिलेगा।

क्या मंगली कुण्डली के कारण- 1. विवाह में बाधा आ रही हैं? 2. विवाह होकर भी सुखमय जीवन नहीं हैं? 3. क्या आपके दाम्पत्य जीवन में कलह तो नहीं? 4. क्या आपके रिश्ते तलाक के कगार पर तो नहीं? 5. संबध हाँ होकर भी तय नहीं हो रहे है? 6. विवाह की उम्र लगभग पूर्ण होने पर भी विवाह सुख नहीं मिल पा रहा? 7. क्या आपकी जीवन साथी के साथ मधुरता नहीं है? 8. बात-बात पर क्रोधमय स्थिति हो जाती हैं? 9. क्या आप कष्टममय वैवाहिक जीवन से हताश है?

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1.मंगल पिरामिड 2.मंगल यंत्र 3.मंगल यंत्र लॉकेट 4.मंत्र जाप के लिये माला 5.मूंगा लॉकेट 6.पारद शिवलिंग 7.सम्पूर्ण विधि

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org